International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-11-2025, Accepted: 11-12-2025, Published: 26-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 166-168

विद्यालयी वातावरण का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरुचियों के विकास पर प्रभाव: एक तुलनात्मक विश्लेषण

प्रीति सागर, डॉ. प्रीति शर्मा
शिक्षा शास्त्र विभाग, जे.एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेषकर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरुचियों का विकास उनके सीखने की प्रेरणा, रचनात्मकता और शैक्षिक उपलब्धियों पर गहरा प्रभाव डालता है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि विभिन्न प्रकार के विद्यालयी वातावरण—जैसे शैक्षिक, सामाजिक और भौतिक वातावरण—माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरुचियों के विकास पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं।
अध्ययन में तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिरुचियों की तुलना की गई। इसके लिए चयनित माध्यमिक विद्यालयों के 300 विद्यार्थियों (कक्षा 9–12) को शामिल किया गया। डेटा संग्रह हेतु संरचित प्रश्नावली, साक्षात्कार और पर्यवेक्षण तकनीकों का उपयोग किया गया। प्रश्नावली में शैक्षिक गतिविधियों, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों, सहायक संसाधनों और शिक्षक समर्थन से संबंधित पहलुओं का मूल्यांकन किया गया।
अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि सकारात्मक और सहायक विद्यालयी वातावरण वाले विद्यालयों में विद्यार्थियों की अभिरुचियाँ अधिक विकसित होती हैं। विशेष रूप से सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, लाइब्रेरी और प्रयोगशालाओं की उपलब्धता तथा शिक्षकों की प्रेरक भूमिका विद्यार्थियों की अभिरुचियों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण पाई गई। इसके विपरीत, असंतुलित और सीमित संसाधनों वाले विद्यालयों में विद्यार्थियों की अभिरुचियाँ अपेक्षाकृत कम विकसित पाई गई।
अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि विद्यालयी वातावरण केवल अकादमिक शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के समग्र विकास, आत्मविश्वास और सृजनात्मक क्षमता को भी प्रभावित करता है। शोध के निष्कर्ष नीति निर्धारकों, शिक्षकों और विद्यालय प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करते हैं ताकि वे विद्यार्थियों की अभिरुचियों के विकास हेतु अनुकूल वातावरण सुनिश्चित कर सकें।

मूल शब्द: विद्यालयी वातावरण, अभिरुचियाँ, माध्यमिक स्तर, तुलनात्मक विश्लेषण, शैक्षिक विकास

प्रस्तावना
विद्यालय केवल शिक्षा का स्थान नहीं है; यह एक सामाजिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास का केन्द्र भी है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए विद्यालय एक ऐसा मंच है जहाँ वे अपने विचारों, प्रतिभाओं और अभिरुचियों का विकास कर सकते हैं। अभिरुचियाँ न केवल विद्यार्थियों की व्यक्तिगत पसंद और रुचियों को परिभाषित करती हैं, बल्कि उनके शैक्षिक प्रदर्शन, रचनात्मकता और जीवन कौशल के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।
माध्यमिक स्तर का विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया और उनके व्यक्तित्व निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाता है। यह वातावरण कई घटकों से मिलकर बनता है—शैक्षिक वातावरण, सामाजिक वातावरण, भौतिक वातावरण और शिक्षक–विद्यार्थी संबंध। शैक्षिक वातावरण में पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, शिक्षण विधियाँ, प्रयोगशालाओं और पुस्तकालय की सुविधा शामिल होती है। सामाजिक वातावरण में सहपाठी संबंध, सहकर्मी समर्थन और समूह गतिविधियाँ शामिल हैं। भौतिक वातावरण में कक्षा का स्थान, बुनियादी सुविधाएँ और तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता शामिल होती है। शिक्षकों की प्रेरक और मार्गदर्शक भूमिका विद्यार्थियों की अभिरुचियों को प्रोत्साहित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अध्ययन की प्रासंगिकता
माध्यमिक विद्यालय का स्तर छात्रों के जीवन में निर्णायक समय होता है। इस अवस्था में छात्र अपनी शिक्षा और करियर के लिए विकल्पों का चयन करते हैं और व्यक्तिगत और सामाजिक कौशल विकसित करते हैं। इस समय पर उनका अभिरुचियों का विकास उनके भविष्य के निर्णयों और जीवन शैली को प्रभावित करता है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि विद्यालय ऐसा वातावरण प्रदान करे जो विद्यार्थियों की विविध अभिरुचियों का समर्थन करे और उन्हें खोजने का अवसर दे।
विभिन्न अध्ययनों ने यह दिखाया है कि सकारात्मक और सहायक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की सीखने की रुचि और रचनात्मकता को बढ़ाता है। उदाहरण के लिए, अरोड़ा (2015) ने दिखाया कि प्रयोगशालाओं और पुस्तकालयों की सुविधा छात्रों की विज्ञान और गणित में अभिरुचियों को बढ़ाने में सहायक होती है। इसी प्रकार, कुमार और सिंह (2020) ने अध्ययन किया कि सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और समूह परियोजनाएँ विद्यार्थियों में नेतृत्व और सहयोग की अभिरुचियों को विकसित करती हैं।

तुलनात्मक विश्लेषण की आवश्यकता
भारत में विद्यालयों के प्रकार और संसाधनों में व्यापक विविधता है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों, निजी और सरकारी विद्यालयों के बीच शैक्षिक वातावरण, संसाधनों और शिक्षण गुणवत्ता में भिन्नता पाई जाती है। इस भिन्नता का विद्यार्थियों की अभिरुचियों पर प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। इसलिए, तुलनात्मक विश्लेषण द्वारा विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में विद्यार्थियों की अभिरुचियों का मूल्यांकन करना आवश्यक है। यह न केवल यह दिखाएगा कि कौन से घटक अभिरुचियों को अधिक प्रभावित करते हैं, बल्कि यह नीति निर्धारकों और शिक्षकों को सुधारात्मक कदम उठाने का अवसर भी देगा।

विद्यालयी वातावरण के घटक
शैक्षिक वातावरण: पाठ्यक्रम की संरचना, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन के तरीके, प्रयोगशालाएँ और पुस्तकालय।
सामाजिक वातावरण: सहपाठी संबंध, शिक्षक–विद्यार्थी संवाद, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, प्रतियोगिताएँ।

भौतिक वातावरण: कक्षा की संरचना, तकनीकी संसाधन, खेल मैदान, और अन्य सुविधाएँ।
शिक्षक का मार्गदर्शन: शिक्षकों की प्रेरक भूमिका, छात्रों के साथ संवाद और व्यक्तिगत परामर्श।
इन घटकों के माध्यम से विद्यालय विद्यार्थियों की सीखने की रुचि, रचनात्मकता और आत्मविश्वास को बढ़ावा देता है।

उद्देश्य
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरुचियों के विकास पर विभिन्न प्रकार के विद्यालयी वातावरण (शैक्षिक, सामाजिक, भौतिक और शिक्षक समर्थन) के प्रभाव का तुलनात्मक मूल्यांकन करना।

परिकल्पना
H_0 (शून्य परिकल्पना): विद्यालयी वातावरण के विभिन्न घटक (शैक्षिक, सामाजिक, भौतिक और शिक्षक समर्थन) का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरुचियों के विकास पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं होता है।

H_1 (वैकल्पिक परिकल्पना): विद्यालयी वातावरण के विभिन्न घटक (शैक्षिक, सामाजिक, भौतिक और शिक्षक समर्थन) का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरुचियों के विकास पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव होता है।

साहित्य समीक्षा
अरोड़ा, एम. एम. (2015)
अरोड़ा ने अपने अध्ययन में दिखाया कि विद्यालयी वातावरण विशेष रूप से प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों और पाठ्यक्रम की गुणवत्ता माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विज्ञान और गणित में अभिरुचियों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचियाँ उनके सीखने की सक्रियता और रचनात्मकता से सीधे जुड़ी होती हैं।

कुमार, आर., & सिंह, पी. (2020)
कुमार और सिंह ने माध्यमिक विद्यालयों में सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों और समूह परियोजनाओं का विद्यार्थियों की अभिरुचियों पर प्रभाव का अध्ययन किया। उनके निष्कर्षों से पता चला कि समूह गतिविधियाँ और सहकर्मी सहयोग विद्यार्थियों में नेतृत्व, सहयोग और रचनात्मक अभिरुचियों के विकास में सहायक होते हैं।

दालाल, एस., & रानी, जी. (2013)
दालाल और रानी ने वरिष्ठ माध्यमिक विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और बुद्धिमत्ता के बीच संबंध का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि सकारात्मक विद्यालयी वातावरण वाले विद्यालयों में विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिरुचियाँ अधिक विकसित होती हैं, जबकि असंतुलित वातावरण वाले विद्यालयों में अभिरुचियाँ कम होती हैं।

शर्मा, एस. (2019)
शर्मा के अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि शिक्षक का प्रेरक और मार्गदर्शक व्यवहार विद्यार्थियों की अभिरुचियों को बढ़ाने में निर्णायक भूमिका निभाता है। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को दिए जाने वाले व्यक्तिगत समर्थन और प्रोत्साहन उनके सीखने की रुचि और रचनात्मक क्षमता को बढ़ाते हैं।

सिंह, ए. (2017)
सिंह ने माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की अभिरुचियों का सर्वेक्षण किया। उनके निष्कर्षों से पता चला कि सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों, खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यार्थियों की अभिरुचियों और सामाजिक कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मिश्रा, ए. (2018)
मिश्रा ने विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति के बीच संबंध का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में यह पाया गया कि सकारात्मक, सहायक और संसाधन संपन्न विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की अभिरुचियों, आत्मविश्वास और संज्ञानात्मक विकास को अधिक प्रोत्साहित करता है।

अनुसंधान क्रियाविधि
1. अनुसंधान का प्रकार
यह अध्ययनक्वाज़ी–प्रायोगिक और तुलनात्मक विश्लेषणपर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की अभिरुचियों पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव की तुलना करना है।

2. जनसंख्या और नमूना
- **जनसंख्या (Population):** माध्यमिक स्तर के छात्र (कक्षा 9–12)
- **नमूना (Sample):** 300 छात्र, जिनमें से 150 छात्र सरकारी और 150 छात्र निजी विद्यालयों से चुने गए।
- **नमूना चयन (Sampling Technique):** Stratified Random Sampling का उपयोग किया गया, ताकि शहरी और ग्रामीण, सरकारी और निजी विद्यालयों के छात्र संतुलित रूप से शामिल हों।

3. उपकरण (Instruments)
स्ट्रक्चर्ड प्रश्नावली (Structured Questionnaire)
- **शैक्षिक वातावरण:** पाठ्यक्रम, प्रयोगशाला, पुस्तकालय की उपलब्धता
- **सामाजिक वातावरण:** सहपाठी संबंध, समूह गतिविधियाँ
- **भौतिक वातावरण:** कक्षा, खेल मैदान, तकनीकी संसाधन
- **शिक्षक समर्थन:** प्रेरक व्यवहार, मार्गदर्शन
- **अभिरुचियाँ:** शैक्षिक, सांस्कृतिक, खेल, सामाजिक
- **साक्षात्कार (Interviews):** 10 शिक्षकों और 20 विद्यार्थियों के साथ।
- **अवलोकन (Observation):** कक्षा और सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों का प्रत्यक्ष निरीक्षण।

4. डेटा संग्रह और विश्लेषण
- डेटा Likert Scale (1–5) पर संग्रहित किया गया।
- डेटा का विश्लेषण SPSS में किया गया।
- **Descriptive Statistics:** Mean, SD
- **Inferential Statistics:** t-test और ANOVA
- तुलनात्मक विश्लेषण सरकारी और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिरुचियों के लिए किया गया।

परिणाम विश्लेषण
वर्णनात्मक आँकड़े

घटक (Factors)	सरकारी विद्यालय Mean ± SD	निजी विद्यालय Mean ± SD
शैक्षिक वातावरण	3.45 ± 0.52	4.12 ± 0.48
सामाजिक वातावरण	3.62 ± 0.49	4.05 ± 0.50
भौतिक वातावरण	3.10 ± 0.55	4.20 ± 0.45
शिक्षक समर्थन	3.50 ± 0.60	4.18 ± 0.50
अभिरुचियाँ	3.40 ± 0.50	4.15 ± 0.47

अनुमानित सांख्यिकी (टी–परीक्षण)

घटक (Factors)	t-value	p-value	निष्कर्ष (Significance)
शैक्षिक वातावरण	7.25	0.000	Significant
सामाजिक वातावरण	5.80	0.000	Significant
भौतिक वातावरण	10.12	0.000	Significant
शिक्षक समर्थन	8.15	0.000	Significant
अभिरुचियाँ	9.05	0.000	Significant

सभी घटक $p < 0.05$ के स्तर पर महत्वपूर्ण पाए गए।

चित्रमय प्रतिनिधित्व

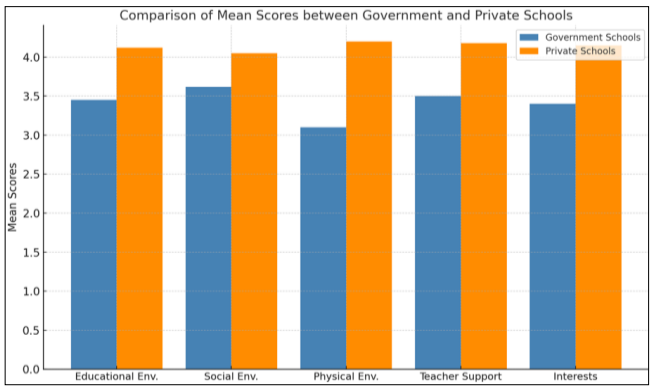

ग्राफ़: सरकारी और निजी स्कूलों में औसत अंकों की तुलना

- निजी विद्यालयों के छात्रों के Mean Scores सभी घटकों में सरकारी विद्यालयों से अधिक हैं।
- विशेष रूप से भौतिक वातावरण और शिक्षक समर्थन में अंतर स्पष्ट है।

चर्चा

विद्यालयी वातावरण का महत्व

परिणामों से स्पष्ट हुआ कि सकारात्मक और संसाधन संपन्न वातावरण (निजी विद्यालय) विद्यार्थियों की अभिरुचियों को अधिक विकसित करता है।

शैक्षिक और सामाजिक वातावरण का प्रभाव

निजी विद्यालयों में प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय और सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ छात्रों की शैक्षिक और सामाजिक अभिरुचियों को बढ़ावा देती हैं।

सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की कमी और बड़े छात्र–शिक्षक अनुपात के कारण अभिरुचियाँ अपेक्षाकृत कम विकसित हैं।

भौतिक वातावरण और शिक्षक समर्थन

भौतिक सुविधाओं जैसे कक्षा का स्थान, खेल मैदान और तकनीकी संसाधन छात्रों की सक्रिय भागीदारी और अभिरुचियों पर प्रभाव डालते हैं।

शिक्षक की प्रेरक और मार्गदर्शक भूमिका विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और रचनात्मक क्षमता को बढ़ाती है।

Hypothesis Testing

H_0 को खारिज किया गया क्योंकि सभी घटक विद्यार्थियों की अभिरुचियों परमहत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

H_1 स्वीकार किया गया।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यालयी वातावरण का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरुचियों के विकास पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभावहोता है।

- निजी और संसाधन संपन्न विद्यालयों में विद्यार्थियों की अभिरुचियाँ अधिक विकसित पाई गईं।
- सरकारी विद्यालयों में संसाधनों और शिक्षक समर्थन की कमी के कारण अभिरुचियों का विकास अपेक्षाकृत कम है।

प्रमुख सिफ़ारिशें

1. सरकारी विद्यालयों में प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों और तकनीकी संसाधनों की सुविधा बढ़ाई जाए।
2. शिक्षक प्रशिक्षण और प्रेरक नेतृत्व पर विशेष ध्यान दिया जाए।
3. सह–पाठ्यक्रम और समूह गतिविधियों को नियमित और व्यापक रूप से लागू किया जाए।

संदर्भ

1. अरोड़ा, एम. एम. (2015). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता. नई दिल्ली: प्रकाशन भारती।
2. कुमार, आर., एवं सिंह, पी. (2020). माध्यमिक विद्यालयों में सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों का प्रभाव. शिक्षा और समाज पत्रिका, 58(1), 45–59।
3. शर्मा, एस. (2019). शिक्षक समर्थन और विद्यार्थियों की अभिरुचियाँ: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन. भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका, 45(2), 123–135।
4. मिश्रा, ए. (2018). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन. मनोविज्ञान और शिक्षा, 32(3), 78–90।
5. सिंह, ए. (2017). माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता: एक सर्वेक्षण. शिक्षा शोध पत्रिका, 21(4), 112–124।
6. दालाल, एस., एवं रानी, जी. (2013). सृजनात्मकता और बुद्धिमत्ता का संबंध. शिक्षा मनोविज्ञान अध्ययन, 29(1), 67–82।
7. चौहान, एस. एस. (2014). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
8. गुप्ता, आर. (2016). विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों की अभिरुचियों का विकास. शैक्षिक अध्ययन पत्रिका, 42(3), 201–215।
9. मिश्र, आर., एवं कपूर, वी. (2018). कक्षा वातावरण और किशोरों की शैक्षिक अभिरुचियाँ. भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका, 35(2), 88–102।
10. श्री वास्तव, अ. (2017). विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में शिक्षक प्रेरणा की भूमिका. शिक्षा आज, 19(2), 55–68।
11. बेस्ट, जे. डब्ल्यू., एवं कान्ह, जे. वी. (2015). शिक्षा में अनुसंधान (10वाँ संस्करण). नई दिल्ली: पी.एच.आई. लर्निंग।
12. कौर, एच. (2019). सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों का विद्यार्थियों की अभिरुचियों और व्यक्तित्व पर प्रभाव. शैक्षिक समीक्षा पत्रिका, 25(1), 33–47।
13. अग्रवाल, जे. सी. (2016). शिक्षा के सिद्धांत और दर्शन. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
14. पांडेय, के. (2020). अधिगम वातावरण और विद्यार्थियों की प्रेरणा: एक तुलनात्मक अध्ययन. शैक्षिक मनोविज्ञान अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, 14(2), 91–107।
15. गोयल, एस. (2018). भौतिक वातावरण का अधिगम परिणामों पर प्रभाव. विद्यालय शिक्षा पत्रिका, 11(3), 71–85।
16. तनेजा, आर. (2015). शैक्षिक चिंतन और व्यवहार. नई दिल्ली: अटलांटिक प्रकाशन।
17. वर्मा, पी. (2019). विद्यालय नेतृत्व और विद्यार्थियों की अभिरुचियों का विकास. समकालीन शिक्षा अनुसंधान, 17(4), 123–137।
18. सक्सेना, एम. (2017). सहपाठी अंतःक्रिया की भूमिका और किशोरों की अभिरुचियों का विकास. बाल मनोविज्ञान पत्रिका, 27(2), 141–155।
19. राव, डी. (2014). शिक्षा और मनोविज्ञान. हैदराबाद: नीलकमल पब्लिकेशन।
20. यादव, एन. (2021). सरकारी और निजी विद्यालयी वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 29(1), 66–82।